ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

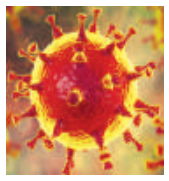

कोरोना संक्रमण
सतर्क रहें – सुरक्षित रहें
मास्क व दूरी –बहुत जरूरी
स्वयं बचें – परिवार बचाएं– देश बचाएं

वर्ष 43, अंक 39 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 24 अगस्त, 2020 से रविवार 30 अगस्त, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में वैबिनार एवं आर्यसन्देश टीवी के माध्यम से

श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर व्याख्यानमाला सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 10 अगस्त से 16 अगस्त, 2020 तक श्रावणी उपाकर्म एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व का आयोजन डॉ. वेद पाल जी प्रधान, परोपकारिणी सभा, अजमेर के सान्निध्य में सहर्ष संपन्न हुआ। इस सात दिवसीय कार्यक्रम में डॉ. वेदपाल जी ने प्राचीन वैदिक युग को स्मरण कराते हुए बताया कि प्राचीन काल में जब यह चौमासा आता था तो उन दिनों स्वाध्यायशील विद्वान, वानप्रस्थी और साधुजन पहाड़ों और जंगलों से गांव, कस्बों और शहरों में आ जाते थे। स्थानीय निवासियों को उपदेश और मार्गदर्शन देते थे, धर्म की राह पर चलने के रास्ते बताए जाते थे, ठीक उसी प्रकार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा इस अवसर को, आर्य परंपरा के अनुसार प्राचीन श्रावणी पर्वों की तरह आयोजित किया जा रहा है। हमारे मनीषियों ने समाज के उत्सवों को यज्ञ के साथ जोड़ दिया, धर्म के साथ जोड़ दिया और विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी मानव जगत को कर्मशील बनने की प्रेरणा दी। इस चौमासे के समय यज्ञों को करना तथा विद्वानों द्वारा वैदिक प्रवचनों को सुनना और सुनाना ही श्रावणी उपाकर्म है।

क्योंकि व्यक्ति ज्ञान प्राप्ति के पश्चात अपने लक्ष्य को नहीं छोड़ता, पूरे मनोयोग से परिश्रम करता है और वह सफल भी होता है। जब हमारे प्रयत्नों से किसी कारण कार्य संपन्न नहीं हो रहा हो, हमारी वाणी में कहीं कुछ दोष हो तो हमें चिंतन करना पड़ेगा और यह समय चिंतन का होता है कि हमारे कार्य जो नहीं बन रहे हैं, उसके क्या कारण हैं, उन कारणों को दूर करना चाहिए और जीवन को सफल बनाना चाहिए। शरीर से, मेधा बुद्धि से, वर्चस्व से, तेजस्वी बनें। मर्यादाओं में रहे, जीवन बंधा हुआ होगा तो समृद्ध होगा। संसार में हर व्यक्ति सफल होना चाहता है। एक भी ऐसा मनुष्य

– शेष पृष्ठ 4 पर

वेद-स्वाध्याय

मन्त्र महिमा

हस्ते दधानो नृम्णा विश्वान्यमे देवान्धाद् गुहा निषीदन्।
विदन्तीमत्र नरो धियन्धा हृदा यत्तष्टान् मन्त्राँ अशंसन्।। ऋ०१/६७/२
ऋषिः **पराशरः।।** देवता - **अग्निः।।** छन्दः **भुरिक्पंक्तिः।।**

शब्दार्थ - हे अग्निदेव **विश्वानि** = सम्पूर्ण **नृम्णा** = ऐश्वर्यों को **हस्ते** = हाथ में **दधानः** = लिए हुए **देवान्** = देवों, दिव्य गुणों को **अमे** = अपने घर में, अपनी ज्ञानमय शरण में **धात्** = धारण करता है, इस प्रकार वह **गुहा** = [हृदय की] गुफा में **निषदन्** = बैठा हुआ, छिपकर बैठा हुआ है। **अत्र** = इस हृदय गुफा में **ईम्** = इसको **धियन्धा** = बुद्धि और कर्म को ठीक प्रकार धारण करने वाले **नरः** = पुरुष **विदन्ति** = तब पा लेते हैं **यत्** = जब वे **हृदा** = हृदय से, हार्दिक भाव से **तष्टान्** = निकले हुए, तेजोयुक्त हुए-हुए **मन्त्रान्** = मन्त्रों को **अशंसन्** = उच्चारण करते हैं।

विनय - मन्त्रों की बड़ी महिमा है। मन्त्रों की शक्ति अद्भुत है। मन्त्रशक्ति से हम जो चाहें वह प्राप्त कर सकते हैं। यह ठीक है कि हम प्रतिदिन वेदमन्त्रों का बहुत उच्चारण करते हैं, तो भी हमें उनसे कुछ प्राप्त नहीं होता। इसका कारण यह है कि ये मन्त्र हमारे हृदय से नहीं निकले होते। जो भक्तलोग हृदय से घड़े हुए, हृदय की गम्भीर गहराई से निकले हुए, हार्दिक भावना से तीक्ष्ण हुए और पवित्र अन्तःकरण की गम्भीर, सूक्ष्म तथा विस्तृत ज्ञानशक्ति से तेजोयुक्त होकर वेद-मन्त्रों को बोलते हैं, वे अपने ऐसे मन्त्रोच्चारण द्वारा उस 'ईक्षण' नामी दिव्य शक्ति को संचालित कर देते हैं जिससे बढ़कर संसार में अन्य कोई शक्ति नहीं है। इसलिए वे नर, वे सच्चे पुरुष, अपने अन्दर ही सब कुछ पा लेते हैं। वे 'धी' को धारण करनेवाले, स्थितप्रज्ञ होने और निष्काम कर्म करने से हृदय-(आत्म) -शुद्धि पा लेनेवाले, अपने हृदय में ही सब-कुछ पा लेते हैं। हृदय की गुफा में जो अग्निदेव छिपे बैठे हैं, सब ऐश्वर्यों को हाथ में लिये हुए और वेदों को अपने में धारण किये हुए हमारे अग्निदेव छिपे बैठे हैं, उन्हें पा लेते हैं। इस प्रकार मन्त्र-शक्ति द्वारा अग्निदेव को पा लेने पर, प्रकट कर लेने पर, फिर संसार का कौन-सा ऐश्वर्य है, कौन-सा दिव्य गुण है जिसे ये 'नर' नहीं पा लेते! संसार के सम्पूर्ण धन-ऐश्वर्यों को हाथ में रक्खे हुए, देवों (दिव्य गुणों) को अपनी ज्ञानमय शरण में लिये हुए ये हमारे अग्निदेव हमारे हृदय में ही स्थित हैं, पर हम हैं कि 'मन्त्रों का उच्चारण करके उन्हें पाते नहीं, हृदय से मन्त्रोच्चारण करना तक नहीं सीखते, हृदय से निकले मन्त्रों से इन्हें प्राप्त नहीं करते।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

राजनीतिक जमीन तलाशने की जुगत में कश्मीरी नेता

6 अगस्त 2019 लोकसभा में जम्मू-कश्मीर राज्य पुनर्गठन विधेयक पर बहस चल रही थी इस दौरान सदन की कार्यवाही शुरू होते ही गृहमंत्री अमित शाह और लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी के बीच तीखी नोंक-झोक हुई थी। इससे एक दिन पहले यानि 5 अगस्त को जम्मू कश्मीर से धारा 370 समाप्त कर दी गयी थी। ये नोंक-झोक इतनी आगे बढ़ी कि गृहमंत्री अमित शाह ने अधीर रंजन चौधरी से एक सवाल पूछा था कि इस मामले में कांग्रेस को अपना रुख साफ करना चाहिए। कांग्रेस बताए कि क्या कश्मीर को संयुक्त राष्ट्र मॉनिटर करे या भारत सरकार?

भले ही इस बहस को एक वर्ष गुजर गया हो, अनुच्छेद 370 भी अब बीता अतीत बन चुका हो। लेकिन एक साल बाद एक नया सवाल खड़ा हो रहा है कि कश्मीर के राजनितिक परिवार क्या चाहते हैं? घाटी को आतंकी मॉनिटर करे या भारत सरकार? इस अनुच्छेद की वजह से जम्मू-कश्मीर के विकास को रोका गया और लोकतंत्र का गला घोंटा गया। वहां कांग्रेस सरकार में आए संविधान संशोधन भी लागू नहीं हुए क्योंकि वोट बैंक प्रभावित हो रहा था। तीन परिवारों की वजह से वहां का विकास नहीं हो सका।

दरअसल गृहमंत्री द्वारा एक वर्ष पहले कही गयी इन बातों का असर आज हो रहा है। पिछले दिनों कश्मीर में तीन बड़े बदलाव देखने को मिले एक तो उपराज्यपाल जीसी मुर्मू की जगह मनोज सिन्हा ने जम्मू-कश्मीर के दूसरे उप राज्यपाल के रूप में शपथ ली। दूसरा कश्मीर घाटी से अर्धसैनिक बलों की संख्या में दस हजार जवानों को कम करने की खबरें आयी और तीसरा नेशनल कांग्रेस व पीडीपी समेत कई दलों के नेताओं से नजरबंदी हटाई गयी। लेकिन इन बदलावों के बाद एक खबर भी आई कि भाजपा को छोड़कर वहां के सभी दलों ने मिलकर अनुच्छेद 370 को फिर से राज्य में बहाल करने के लिए साझा घोषणा पत्र को तैयार किया गया है। उसमें नेशनल कॉन्फ्रेंस के फारुक अब्दुल्ला, पीडीपी की महबूबा मुफ्ती, जेकेपीसीसी के जी. मीर, माकपा के एमवाई तारीगामी, जेकेपीसी के सज्जाद गनी लोन, जेकेएएनसी के मुजफ्फर शाह के नाम शामिल हैं।

आखिर ऐसा क्या हुआ जो नजरबंदी हटते ही कश्मीर के सभी दल इस घोषणापत्र को लेकर खड़े हो गये तो इसका भी जवाब एक साल पीछे मिलेगा क्योंकि अधीर रंजन चौधरी के सवाल पर जवाब देते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा में कहा था कि कश्मीर के तीन परिवारों ने कश्मीर को जमकर लूटा पूरे देश को पता है कि वो तीन परिवार कौन हैं। जन कल्याण का जो पैसा केंद्र से राज्य में भेजा गया उससे जनता का पूरा विकास नहीं हुआ क्योंकि 370 की वजह से भ्रष्टाचार चलता रहा। यह पैसा कहां गया, इसी 370 को ढाल बनाकर भ्रष्टाचार करने का काम वहां के नेताओं ने किया है।

असल में धारा 370 कश्मीर में एक अनुच्छेद ही नहीं बल्कि रोजगार का एक बड़ा साधन भी था। हमेशा धारा 370 की आड़ में वहां आतंकवाद बढ़ता चला गया, लोगों को बरगलाया गया। परिणाम यह रहा कि वहां की जनता को गरीबी के अलावा कुछ नहीं मिला। देशभर के बाकी राज्यों में आतंकवाद क्यों नहीं पनपा क्योंकि वहां 370 नहीं थी जो अलगाववाद का मूल पैदा करती रही थी। दिल्ली हमेशा श्रीनगर को पैसा भेजती रही लेकिन श्रीनगर से दिल्ली को हमेशा जवानों के पार्थिव शरीर और धमकियां ही मिलती रही। अब जब पिछले वर्ष दिल्ली और श्रीनगर के बीच की दीवार 370 गिर गयी तो ये लोग अब दोबारा उसी दीवार की चाह में साझा घोषणापत्र जारी कर रहे हैं। घाटी में सत्तारूढ़ पार्टी बीजेपी से जुड़े नेताओं की हत्या तक की जा

.....धारा 370 कश्मीर में एक अनुच्छेद ही नहीं बल्कि रोजगार का एक बड़ा साधन भी था, वहां हमेशा धारा 370 की आड़ में वहां आतंकवाद बढ़ता चला गया, लोगों को बरगलाया गया। परिणाम यह रहा कि वहां की जनता को गरीबी के अलावा कुछ नहीं मिला। देशभर के बाकी राज्यों में आतंकवाद क्यों नहीं पनपा क्योंकि वहां 370 नहीं थी जो अलगाववाद का मूल पैदा करती रही थी। दिल्ली हमेशा श्रीनगर को पैसा भेजती रही लेकिन श्रीनगर से दिल्ली को हमेशा जवानों के पार्थिव शरीर और धमकियां ही मिलती रही। अब जब पिछले वर्ष दिल्ली और श्रीनगर के बीच की दीवार 370 गिर गयी तो ये लोग अब दोबारा उसी दीवार की चाह में साझा घोषणापत्र जारी कर रहे हैं। घाटी में सत्तारूढ़ पार्टी बीजेपी से जुड़े नेताओं की हत्या तक की जा रही है। लोगों में खोफ पैदा कर राज्य को फिर से मजहबी आग में झोकना चाह रहे है।.....

रही है। लोगों में खोफ पैदा कर राज्य को फिर से मजहबी आग में झोकना चाह रहे हैं।

दूसरा एक दूसरे के धुरविरोधी रहे ये आज सभी दलों के नेताओं को न तो जम्मू-कश्मीर की चिंता है और न ही 370 की। बल्कि अब ये लोग केन्द्रीय शासन में खुलने वाली फाइलों से परेशान हैं। उपराज्यपाल आते ही वहां ठंड में पसीने आने लगे हैं और अब फाइलें खुल रही हैं। परिणाम भी दिख रहा है अलगाववादी नेता सैयद अली शाह गिलानी ने हुर्रियत कॉन्फ्रेंस से इस्तीफा दे दिया है, जम्मू कश्मीर का पुलिस बल सेना के साथ मिलकर आतंक से लड़ रहा है, अनुच्छेद 370 के हटने के बाद मुख्यधारा में लौटने लगा है।

अगर देखा जाए तो छिटपुट घटनाओं को छोड़कर कश्मीर में शांति बनी रही। लेकिन जम्मू-कश्मीर के लिए एक ऐसी समस्या भी है जो फिलहाल खत्म करना बड़ी चुनौती है। दरअसल यह चुनौती स्थानीय लोगों को रोजगार मुहैया कराने की है। एक बात सच और भी है इससे जम्मू-कश्मीर ही नहीं बल्कि देश में बेरोजगारी लगातार बढ़ती जा रही है। इसके अलावा जम्मू कश्मीर में विकास का मुद्दा भी काफी अहम है। सड़क, पानी, बिजली जैसी समस्या खत्म करना वहां की सबसे बड़ी जरूरत है। मोदी सरकार उस दिशा में बढ़ भी रही है। सरपंच और पंचों के जरिए जम्मू कश्मीर में विकास के कार्य करवाए जा रहे हैं। केंद्रीय परियोजनाएं भी खूब शुरू हो रही हैं। युवा सरपंचों को महत्व दिया गया तथा सरपंचों को प्रतिमाह 2500

- शेष पृष्ठ 7 पर

दिल में दर्द लेकर लौटे अफगानिस्तान हिन्दू-सिख

.....50 सालों में मजहबी कौमी एकता की बात करने वाले मजहबी किताब को शांति का सन्देश बताने वालों की और से कोई एक विरोध प्रदर्शन, कोई बयान, कोई निंदा यहाँ देखने को नहीं मिली। उल्टा जब नागरिकता संशोधन कानून पारित किया ताकि इन बचे-कुचे पीड़ितों को भारत की नागरिकता दी जा सके तो देशभर में एक जंग का माहौल खड़ा कर दिया गया। जबकि अफगा- निस्तान में अल्पसंख्यकों हिन्दू और सिखों को स्कूलों में प्रवेश नहीं दिया जाता। दोनों ही समुदायों के लोगों को सार्वजनिक रूप से काफिर कहा जाना, उन पर थूका जाना, और उनकी शव-यात्राओं पर पत्थर फेंके जाना, आम बात है। इन दोनों समुदायों की महिलाओं को बाहर निकलने के लिए बुर्के और हिजाब का इस्तेमाल करना पड़ता है। दुकानदारों को स्थानीय एजेंसियों को व्यापार करने की एवज में 'जजिया' चुकाना पड़ता है। सरकारी नौकरियों में इन्हें कोई जगह नहीं दी जाती है। यह सब जानने के बावजूद भी भारत का विपक्ष नागरिकता संशोधन कानून का विरोध करता रहा।.....

23 मार्च 2019 की सुबह-सुबह सोशल मीडिया पर एक अपील घूमती दिखाई दी थी। ये अपील देश के मुसलमानों की ओर से की गयी थी लिखा था कि इस अपील को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचायें, क्या आपने इजरायली बमबारी में घायल और मृत बच्चों की तस्वीर और गाजा की तबाही देखी? जियनवादी हत्यारे वहाँ इस सदी का सबसे बड़ा नरसंहार कर रहे हैं, वे गाजा को नेस्तानाबूद कर देना चाहते हैं, दुनिया की सरकारें चुप हैं, पर जनता सड़कों पर विरोध कर रही है, मोदी सरकार चुप है, पर हमें जियनवादियों का विरोध कर अपने जिन्दा होने का सबूत देना होगा।

असल में यह अपील भारत से हजारों मील दूर इजरायल हमले में मारे गये कुछ फिलिस्तीनी मुस्लिमों के पक्ष में जारी की गयी थी। लेकिन जब कुछ समय पहले काबुल के गुरु हरराई साहिब गुरुद्वारे पर हुए आतंकी हमले 25 सिख मारे गये थे तब कोई अपील जारी नहीं की गयी, न कहीं विरोध प्रदर्शन देखने को मिला और न ही कोई अवार्ड वापिस हुआ। तब अफगानिस्तान में मारे गये सिखों के परिवारों को और जो सिख वहां जिन्दा बचे थे उन्हें आशा एक किरण नजर आई और वह थी भारत का नागरिकता संशोधन कानून, जिसके विरोध में कौमी एकता के ढोल पीटने वालों ने कई महीने तक शाहीन बाग में जमकर देशविरोधी उत्पात मचाया था।

अब इस नागरिकता संशोधन कानून के सहारे अफगानिस्तान से 128 हिंदू व सिख परिवार भारत पहुंचे हैं, अब तक 180 परिवार यहां पहुंच चुके हैं। 400 से अधिक सिखों और हिंदुओं को निकालने के लिए चार्टेर्ड उड़ानों की व्यवस्था की जा रही है। 26 जुलाई को पहला जत्था भारत आया था, मजहबी शैतानों की सनक के शिकार बने 700 सिखों को भारत वापस लाया जाएगा। अब सवाल है कि आखिर इन लोगों को अपना वतन क्यों छोड़ना पड़ रहा है? जिस मुल्क में पैदा हुए, जिसकी माटी को सींचा, आज वहां से अपना घर-बार छोड़कर क्यों भागना पड़ रहा है?

दरअसल 1970 के दशक में अफगानिस्तान में हिन्दू और सिख दोनों ही समुदायों की कुल आबादी लगभग नौ लाख थी, व्यापार और शिक्षा के क्षेत्र में दोनों ही समुदायों का वर्चस्व था। ईरानी क्रांति के बाद यहाँ भी मजहबी आयतों से देश चलने लगा और देखते ही देखते 2010 तक 3 हजार और अब इनकी संख्या संख्या करीब 700 बची है। यानि पिछले 50 साल में 8 लाख 99 हजार 300 हिन्दू और सिख कहाँ गये शायद ही कोई जानता हो। लेकिन पिछले इन 50 सालों में मजहबी कौमी एकता की बात करने वाले मजहबी किताब को शांति का सन्देश बताने वालों की और से कोई एक विरोध प्रदर्शन, कोई बयान, कोई निंदा यहाँ देखने को नहीं मिली। उल्टा जब नागरिकता संशोधन कानून पारित किया ताकि इन बचे-कुचे पीड़ितों को भारत की नागरिकता दी जा सके तो देशभर में एक जंग का माहौल खड़ा कर दिया गया। जबकि अफगा-निस्तान में अल्पसंख्यकों हिन्दू और सिखों को स्कूलों में प्रवेश नहीं दिया जाता। दोनों ही समुदायों के लोगों को सार्वजनिक रूप से काफिर कहा जाना, उन पर थूका जाना, और उनकी शव-यात्राओं पर पत्थर फेंके जाना, आम बात है। इन दोनों समुदायों की महिलाओं को बाहर निकलने के लिए बुर्के और हिजाब का इस्तेमाल करना पड़ता है। दुकानदारों को स्थानीय एजेंसियों को व्यापार करने की एवज में 'जजिया' चुकाना पड़ता है। सरकारी नौकरियों में इन्हें कोई जगह नहीं दी जाती है। यह सब जानने के बावजूद भी भारत का विपक्ष नागरिकता संशोधन कानून का विरोध करता रहा।

दूसरी ओर दुखद आश्चर्य ये भी था कि पंजाब के अधिकतर नेता जिनमें मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह, आम आदमी पार्टी के नेता भगवंत मान और यहां तक कि सिखों की सर्वोच्च धार्मिक संस्था अकाल तख्त के जत्थेदार हरप्रीत सिंह ने भी जिहादी-नक्सली षड्यंत्र को पहचानने की जहमत नहीं उठाई और सीएए विरोध को समर्थन दे दिया। कैप्टन अमरिंदर सिंह न तो विधानसभा में सीएए के विरोध में प्रस्ताव तक पारित करवा दिया। केवल इतना ही नहीं लगभग पूरा पंजाबी मीडिया जिहादियों-नक्सलियों के समर्थन में बोलता नजर आया। यानि इस्लामिक देशों से पीड़ित होकर आए हिंदू-सिखों को भारतीय नागरिकता देने के मार्ग में जितने कांटे बिछाने का कार्य हो सकता था तब सबने मिलकर किया।

लेकिन जैसे ही 25 मार्च को जिहादी आतंकियों ने हमला कर 27 सिख श्रद्धालुओं की निर्मम हत्या कर दी, हत्यारों ने न तो बच्चों को देखा, न महिलाओं या बूढों को, जो भी सामने आया उसे गोलियों का निशाना बनाते रहे। इस घटना के बाद पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने लोगों से मृतकों की आत्मिक शांति के लिए अरदास करने की अपील की और विदेश मंत्री को ट्वीट कर कहा कि 'प्रिय एस जयशंकर, अफगानिस्तान में ऐसे बहुत से सिख परिवार हैं जो भारत आना चाहते हैं। आपसे अनुरोध है कि शीघ्र-अतिशीघ्र उन्हें वहां से निकालें। संकट के समय ये हमारा धर्म है कि हम उनकी मदद करें।'

ये ट्वीट करने वाले कांग्रेस के वही मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने 17 जनवरी को विधानसभा में अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश से प्रताड़ित होकर आने वाले हिंदू-सिख व अन्य अल्पसंख्यकों को नागरिकता देने वाले को देश के संविधान की मूल भावना के खिलाफ बताया था। लेकिन काबुल की घटना के बाद इनके मुंह सिल गए हैं क्योंकि अफगानिस्तान के काबुल में मारे गए सिखों का कसूर सिर्फ यह था कि वह सिख थे और इस्लामिक आतंकियों की नजर में काफिर थे। हालाँकि हमारे पड़ोसी इस्लामिक देशों पाकिस्तान, बांग्लादेश व अफगानिस्तान में हिंदू-सिखों सहित धार्मिक अल्पसंख्यकों पर इस तरह की अत्याचार की घटनाएं न तो नई हैं और ही आखिरी थी।

क्योंकि सिखों और हिन्दुओं का इतिहास मजहबी पीड़ा से भरा पड़ा है इसके अलावा इससे भी कोई अनजान नहीं है कि इस्लाम के जन्म से पहले ही पांचवी और छठी शताब्दी में अफगानिस्तान में बौद्ध धर्म पहुंच चुका था! भारत में कुषाण वंश के समय में ही अफगानिस्तान में बौद्धिष्ट धर्म का प्रचार-प्रसार प्रारंभ हुआ था! लेकिन जैसे ही इस्लाम दाखिल हुआ उसने नरसंहार प्रारंभ कर दिए और यह आज तक चल रहा है! अब ना अफगानिस्तान में बुद्धिष्ट बचे हैं न हिंदू न सिख! सोचिये कल जब भारत में अगर शरियत लागू होगी तब यहाँ आने वाले लोग और यहाँ के लोग किस देश में शरण लेंगे? शायद किसी के पास कोई जवाब नहीं होगा क्योंकि मजहबी किताब एक ही है उसके उसूल और आयते एक ही है उससे निकले कानून एक ही है जिसमे गैर मुस्लिम को काफिर लिखा गया है। उसी देश का शिकार होकर आज सिख और हिन्दू अफगानिस्तान से भारत आ रहे है।

– ***राजीव चौधरी***

पृष्ठ 2 का शेष

राजनीतिक जमीन तलाशने ...

और पंचों को 1000 की प्रोत्साहन राशि भी दी जाने की शुरुआत कर दी गई है। ग्राम पंचायतों की बही खाते की देखरेख के लिए दो हजार से ज्यादा अकाउंटेंट की भर्ती प्रक्रिया शुरू की गई है।

इसके अतिरिक्त पुल सडकों, शोपिंग मॉल बन रहे हैं। अलगावादियों की दुकाने बंद हो चुकी हैं तो इन लोगों को अब दुबारा अपनी राजनीती के लिए जमीन चाहिए और वह जमीन है अनुच्छेद 370। क्योंकि इसी अनुच्छेद की आड़ में ये लोग फिर से युवाओं को मजहबी घुट्टी पिलाकर उनके हाथों से कलम लेकर बारूद थमा देना चाहते हैं। इसलिए इनकी एकता का यह बेमेल घोषणापत्र राज्य के विकास के लिए नहीं बल्कि अपनी कट्टर मजहबी दुकानदारी का प्रमाण पत्र है। अपनी राजनितिक दुकान बंद होने का शोकपत्र है। – ***सम्पादक***

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर व्याख्यानमाला सम्पन्न

नहीं मिलेगा जो असफल होना चाहेगा। प्रज्ञा से, भौतिक संसाधनों से, सम्बंधित होकर ही हम अपने परिवार व समाज और धर्म की रक्षा कर पाएंगे। हमें अपनी संस्था को आगे बढ़ाना है, वेद के विचारों को आगे बढ़ाना है, तो गांव-गांव तक हमें पहुंचना होगा, हमें भौतिक साधनों से भी समृद्ध होना पड़ेगा। हम दीप्तिमान हों, हमारा समाज दीप्तिमान हो, हमारा देश दीप्तिमान हो, यही प्रयास करने के लिए हमें स्वाध्याय करना होगा और बीज रूप में जो वेदों से ज्ञान मिला है, उसको अपने जीवन में उतारना होगा, उसके अनुरूप जीवन जीना होगा तभी हम सफल हो और समृद्ध होंगे।

श्रावणी उपाकर्म का एक और प्रयोजन यह भी है, वह है पितरों का तर्पण। यह तीन प्रकार से संपन्न होता है पहला ऋषियों - मनीषियों का तर्पण, वह स्वाध्याय द्वारा पूरा होता है अर्थात स्वाध्याय करेंगे, उनके लिखे शास्त्र पढ़ेंगे, उनके अनुरूप अपना जीवन जिएंगे, उनकी बताई विद्या को आगे बढ़ाएंगे, स्वाध्याय द्वारा दूसरों को सुना कर उस ज्ञान को आगे बढ़ाएंगे तो उनकी तृप्ति होगी। दूसरा देवों का तर्पण अर्थात देवों की वृद्धि करना। अग्नि और सोम को तृप्त करना। शतपथ ब्राह्मण में ने यज्ञ को जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कृत्य बतलाया है- 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'। हम सुंदर समिधा, सामग्री, गाय के देसी घी से व औषधियों से यज्ञ करें तो हमारी वनस्पतियां, हमारा पर्यावरण, हमारी नदियां, वायुमंडल आदि जो हमारे देवता हैं जिनके कारण हमारा जीवन आगे बढ़ रहा है, हमारी भावी पीढ़ियां ऊर्जावान होंगी, उन्हें तृप्त करने का मतलब है उनको समृद्ध करना, उनको शक्तिशाली बनाना ताकि हमारा भविष्य भी शक्तिशाली बने। आंतरिक अग्नि को भी प्रज्ज्वलित करना है, उसको भी समृद्ध करना है, ताकि वह हमारे जीवन को मर्यादित करें। अपने पितृ जनों अर्थात जीवित माता-पिता, आचार्य, गुरु, अतिथि, वानप्रसथी, साधु सन्यासियों का मान सम्मान करना, उनको आर्थिक सहयोग देना चाहिए ताकि वह अभावग्रस्त न हों। हमें किसी का अपमान नहीं करना, किसी को दुख नहीं पहुंचाना बल्कि दूसरों के जीवन को सुखमय करना है।

वेदों के मंत्रों का बहु आयामी अर्थ हैं, मन्त्र हमें शुद्ध संदेश देते हैं। हर व्यक्ति संयोग और वियोग से पृथक नहीं हो सकता, इस प्रक्रिया का दृष्टा पर जो प्रभाव है वह हर्ष और विषाद से बच नहीं सकता, इसकी अनुभूति हर प्राणी करता रहता है। हमारे दार्शनिक इसको मन और समष्टिगत मन मानते हैं। मन पर बहुत सारे दृश्य और विचार उभरते रहते हैं और समष्टिगत मन पर बहुत सारी छवियां, बहुत सारी अवधारणाएं, बहुत सारे चित्र हमेशा छाए रहते हैं। विचार या अवधारणा समष्टि के मन पर उस समय आ जाती है जब वह व्यक्ति अपनी सेवा समर्पण द्वारा जब उसके क्षेत्र, समाज, राष्ट्र और विश्व तक फैल जाए तो उस व्यक्ति का जगत में एक विशेष स्थान बन जाता है और लोग उस क्षेत्र, समाज, राज्य से ऊपर उठकर उसको ईश्वरीय शक्तियों से संलग्न मानते हैं। उस व्यक्ति विशेष का प्रभाव क्षेत्र बहुत ही बड़ा फैला हुआ हो जाता है, उसका हर कार्य ईश्वरीय मानने लगते हैं। ऐसे व्यक्ति भी संयोग और वियोग से ऊपर या अलग नहीं हो पाते, उनका भी जन्म और मृत्यु होती है। उसके बारे में अनेक प्रकार की किवदंतियां, अनेक प्रकार के विचार, अनेक प्रकार की कहानी किस्से कहे जाते हैं। लोग उनकी शाश्वत सत्ता तक मानने लगते हैं, हमारे आपकी तरह साधारण सत्ता या क्षणिक सत्ता नहीं होती। मनुष्य रहते हुए भी, वह शाश्वत सत्ता अमर हो जाती है अनादि हो जाती है, और लोग उसको भगवान मानने लगते हैं क्योंकि शास्त्र कहते हैं-

समग्र ऐश्वर्य, सम्पूर्ण धर्म, सम्पूर्ण यश, सम्पूर्ण श्री एवं सम्पूर्ण ज्ञान, वैराग्य जिनमें विद्यमान हो उन्हें भगवान कहा जाता है। वह मनुष्य न होकर महापुरुष बन जाते हैं, साधारण न होकर अलौकिक हो जाते हैं और उनको चिरकाल तक स्मरण किया जाता है। ऐसे ही महापुरुषों में श्री कृष्ण का नाम लिया जाता है। आज उनके जन्मदिन पर हम उनको स्मरण करते हैं उनके किए हुए कार्यों को नमन करते हैं।

बहुत सारे कथाकारों ने अपनी कल्पनाओं के अनुरूप उन पर बहुत कुछ लिखा, सुना और सुनाया। श्री कृष्ण का जीवन साधारण न होकर अलौकिक जीवन था। कंस की बहन देवकी का वासुदेव से विवाह होना, श्री कृष्ण का जन्म बहुत ही विपरीत परिस्थितियों में होना, फिर उनका यशोदा द्वारा लालन-पालन होना, पूतना व दो राक्षसों का वध होना, कंस का वध होना, मथुरा छोड़ द्वारका अपना राज्य स्थापित करना, जरासंध को समाप्त कर 86 राजाओं को कैद से छुड़वाना, उत्तर पूर्व के राजा द्वारा 16000 स्त्रियों को कैद से छुड़वाना, शांति स्थापित करने का प्रयास करना, महाभारत का युद्ध और फिर गीता उपदेश यह सब अलौकिकता ही था। कलाकारों ने अपनी कल्पनाओं के अनुरूप बहुत कुछ लिखा, उनके लिखने का कारण है कि चमत्कार के ऊपर जितना मर्जी बढ़ा दो, लोग पढ़ेंगे तो एक के 10 नबंर देंगे। इन्हीं कारणों की वजह से योगिराज श्री कृष्ण को बहुत सारी गलत कथाओं, गलत विचारों, दुष्ट व्यक्तियों द्वारा अनाप-शनाप प्रचारित किया गया। एक व्यक्ति विशेष के बहुत सारे संबंधों में, कहीं मां के बराबर, कहीं बेटी और कहीं प्रेमिका, जबकि यह संभव नहीं। इस काल्पनिक चरित्र का कहीं भी महाभारत के रचयिता के साथ श्री कृष्ण के चरित्र से मेल नहीं खाता। उनका बल बेजोड़ था, उनकी बुद्धि और विवेक सामर्थ्य बेजोड़ था, उनके दिव्य गुणों का उनके समकालीन और उनके उपरांत अभी तक के सभी महापुरुषों के गुणों से कहीं भी मेल नहीं दिखाई देता जो उनमें थे। उनकी नीतियां बहुत ही व्यवहारिक और सुंदर थी, उनके द्वारा किए गए सभी कार्यो से ही उनको महाभारत के युद्ध में सफलता मिलती है। उनका व्यापक रूप सत्य पर आधारित था और सत्य को कहने से वे पीछे नहीं हटते थे। महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन ने युद्ध नहीं लड़ने की मनोदशा प्रदर्शित की तो श्री कृष्ण ने उनका मनोरोग तोड़ा, सत्य से परिचित करवाया। गीता उपदेश में श्री कृष्ण ने समझाया तो अर्जुन बोले -

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा
त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।

- हे अच्युत ! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है और स्मृति प्राप्त हो गयी है। मैं सन्देहरहित होकर स्थित हूं। अब मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा। श्री कृष्ण ने धर्म की सत्ता का बोध कराया और धर्म की स्थापना की, इसीलिए गीता का कथाकार अंत में कहता है कि

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

जहाँ योगेश्वर श्री कृष्ण हैं और जहाँ धनुर्धारी अर्जुन है वहीं पर श्री, विजय, विभूति और ध्रुव नीति है, ऐसा मेरा मत है।।

महर्षि देव दयानंद जी ने कहा है कि श्री कृष्ण का चरित्र बहुत ही उत्तम था। उन्होंने जन्म से लेकर मरण पर्यत कोई भी अनुचित कार्य नहीं किया, ऐसा आदर्श चरित्र था। श्री कृष्ण जी ने धर्म की स्थापना की। श्री कृष्ण न चोर थे न जार थे, न प्रेमी थे, न उनकी प्रेमिका थी, न सत्ता के भूखे थे, वह तो दिव्य पुरुष थे, हमें उनका जन्मदिन इसी दिव्यता के साथ मनाना चाहिए। यहीं उनको श्रद्धा सुमन हैं कि उनके आचरण को अपने जीवन में स्वीकार करें।

डॉ. वेद पाल जी ने बताया कि विद्या की सात पुरियों में से काशीपुरी का अपना एक विशेष स्थान रखती है। वैचारिक दृष्टि से भी काशी की महत्वपूर्ण भूमिका थी लेकिन कभी भी इसको ललकारा नहीं गया। प्रथम बार महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने नवंबर 1869 में काशी के समृद्ध वैचारिक समुदायों को ललकारा कि प्रतिमा पूजा वेदों में लिखी हुई नहीं है, तो प्रतिमा पूजा छोड़ दीजिए। वहां के पंडितों ने इसका ढंग से जवाब तो नहीं दिया लेकिन कोलाहल और उपद्रव मचाया। श्री रघुनाथ कोतवाल ने महर्षि के प्राणों की रक्षा की। 5 साल के अंतराल में महर्षि कई बार काशी नगर गए। 1874 में वहां के डिप्टी कलेक्टर राजा जय किशन दास ने उनसे अनुरोध किया कि आप अपने उपदेशों का लेखन पुस्तक रूप में कर दें तो हजारों लाखों लोगों के अपार समूह तक आपकी बात पहुंच जाएगी और सबका कल्याण होगा। तब महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के लेखन का कार्य आरंभ करवाया। 1875 में इस पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ तो उसके कागज व छपाई आदि का सारा खर्चा भी राजा जय किशन दास ने वहन किया। कुछ परिस्थितियों या राजनीतिक मजबूरियों के कारण उन्होंने 12 और 13 सम्मुलास नहीं छपवाया और लेखक पं. चन्द्र शेखर शास्त्री ने भी कुछ बातें अपनी तरफ से जोड़ दीं, लेकिन महर्षि दयानंद जी को इसकी जानकारी नहीं प्राप्त हुई और वह प्रूफ रीडिंग आदि का कार्य समय अभाव के कारण नहीं देख पाए जिसके कारण कुछ बहुत ही गलत संदर्भ इस पुस्तक में छप गया जिसकी जानकारी पत्र द्वारा महर्षि को कुछ महानुभावों ने दी। तदोपरांत महर्षि ने इसका पुनः मुंद्रण होने से पहले 14 महीने लगातार नौलखा महल, उदयपुर में रहकर, इसकी प्रूफ रीडिंग और अनेक भ्रांतियां और गलतियों को सुधार कर मार्च 1883 में सत्यार्थ प्रकाश को उन्होंने पुनः प्रकाशित करवाया। इसके द्वीतीय संस्करण में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव किए गए। यह संस्करण दार्शनिक संस्करण हो गया जो वर्तमान में भी लगातार प्रकाशित हो रहा है और लाखों लोगों के जीवन को दीप्तिमान कर चुका है तथा भविष्य में करता रहेगा। लाखों लोगों के लिए यह अमृतावर्षिनी हुई और कुछ लोगों के लिए वज्रपात के समान विष दायिनी हो गया। हजारों लोगों के जीवन इसको पढ़कर बदल गए, जिसने भी महर्षि के इस अमर ग्रंथ को थोड़ा सा पढ़ लिया उसका जीवन कांतिमय हो गया और जब जब उन्होंने इसे पुनः पढ़ा तो कुछ और ही चमत्कार उनके जीवन में हुआ। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर बहुत सारे लोगों के जीवन की दिशा और दशा बदल दी। बहुत सारे व्यक्तियों की जीवनधारा उल्टी बहने लगी और उनका जीवन अपने मत-मतांतर को छोड़ ज्ञान गंगा में बहने लग गया। लेकिन कुछ वर्ग विशेष ऐसा भी हैं जिन्होंने इसको न छपवाने के लिए मुकदमे किए, कोर्ट कचहरी के चक्कर काटे लेकिन उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ।

प्रथम सम्मुलास उन्होंने ईश्वर को समर्पित किया और उसकी बहुत ही सुंदर व्याख्या की। ईश्वर के सत्य स्वरूप को स्पष्ट किया। ईश्वर एक है उसका निज नाम ओ३म् है। बाकी नाम उसकी शक्तियों, विशेषणों, संज्ञात्मक तथा ईश्वरवाची गुणों के हैं। ईश्वर के 100 नामों की बहुत ही सुंदर विवेचना की। उन्होंने ईश्वर की अवधारणा को स्पष्ट किया। अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश इन सबकी गुणात्मक व्याख्या की। उसके टुकड़े नहीं हो सकते लेकिन वह सर्व व्यापक है। सृष्टि कर्त्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता है, इसलिए वह है ओ३म् ।

महर्षि दयानंद को बिना जाने, बिना उनका साहित्य पढ़े, बिना उनके कार्यो को जाने, आज भी बहुत सारे व्यक्ति व समुदाय ऐसे हैं जो उनको नास्तिक मानते हैं और हिंदू धर्म का विरोधी मानते हैं। डॉ. वेद पाल जी को भी बहुत सारे ऐसे व्यक्ति मिले, डॉक्टर जी ने उनको महर्षि के किए कार्यों और उनके सहित्य विशेषकर सत्यार्थ

- शेष पृष्ठ 7 पर

महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन ने युद्ध नहीं लड़ने की मनोदशा प्रदर्शित की तो श्री कृष्ण ने उनका मनोरोग तोड़ा, सत्य से परिचित करवाया। गीता उपदेश में श्री कृष्ण ने समझाया तो अर्जुन बोले - नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।

- हे अच्युत ! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है और स्मृति प्राप्त हो गयी है। मैं सन्देहरहित होकर स्थित हूं। अब मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा। श्री कृष्ण धर्म की सत्ता का बोध कराया और धर्म की स्थापना की, इसीलिए गीता का कथाकार अंत में कहता है कि

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

जहाँ योगेश्वर श्री कृष्ण हैं और जहाँ धनुर्धारी अर्जुन है वहीं पर श्री, विजय, विभूति और ध्रुव नीति है, ऐसा मेरा मत है।।

महर्षि देव दयानंद जी ने कहा है कि श्री कृष्ण का चरित्र बहुत ही उत्तम था। उन्होंने जन्म से लेकर मरण पर्यत कोई भी अनुचित कार्य नहीं किया, ऐसा आदर्श चरित्र था। श्री कृष्ण जी ने धर्म की स्थापना की। श्री कृष्ण न चोर थे न जार थे, न प्रेमी थे, न उनकी प्रेमिका थी, न सत्ता के भूखे थे, वह तो दिव्य पुरुष थे, हमें उनका जन्मदिन इसी दिव्यता के साथ मनाना चाहिए। यहीं उनको श्रद्धा सुमन हैं कि उनके आचरण को अपने जीवन में स्वीकार करें।

आर्यसमाज के सेवा संस्थान - अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत कार्यरत सेवा ईकाई

'सहयोग' द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन वस्त्रों का वितरण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई 'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' का सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

दिनांक 23 अगस्त, 2020 को रेशमा कैम्प, कीर्ति नगर में यज्ञ एवं वस्त्र वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

यज्ञ भारतवर्ष की परम्परा रही है। आदिकाल से हमारे पूर्वज यज्ञ की पवित्र अग्नि को प्रज्जवलित करते आएं हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम हों या योगेश्वर श्री कृष्ण सभी सपत्नीक दैनिक यज्ञ किया करते थे। अपने पूर्वजों की इस परम्परा का हम भी निरंतर निर्वहन कर रहे हैं। मगर समय के पलटवार ने लोगों को यज्ञ से दूर कर दिया और धर्म के ठेकेदारों ने कुछ लोगों से यज्ञ का अधिकार छीन लिया। परन्तु आर्य समाज अधिकारों से वंचित उन लोगो के बीच जाकर उनके साथ यज्ञ कर रहा है जिससे हम सभी अपनी इस पवित्र अग्नि की जोत को जलाये रख सकें।

'सहयोग' उन वंचितों की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक वस्त्र की आवश्यकता को पूरा कर रहा है। आज 'सहयोग' ने कीर्ति नगर की रेशमा कैम्प की जे. जे. कॉलोनी में यज्ञ किया तथा वस्त्र वितरण किये।

यज्ञ में लगभग सभी क्षेत्रवासियों ने भाग लिया और अंत तक सभी यज्ञ मे बैठे रहे। आर्य वीर दल के साथियों ने कार्यक्रम मे अपना सहयोग दिया।

आपका योगदान - 'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें, हम उसे हर जरूरतमंद तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है-

आर्य समाज मन्दिर,
डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी,
निकट फिल्मिस्तान,
दिल्ली-110007

महाशय जी के आशीर्वाद से गुरुकुलों के विकास में आगे बढ़ रहा है आर्य समाज

प्राचीन समय से ही अपनी महान विशेषताओं के लिए विख्यात रहे गुरुकुलों का मैकाले के समय जो हुआ उससे सभी भली भांति परिचित हैं लेकिन अब अपनी विरासत को संजोने तथा उनके उद्दार की अतिआवश्यकता को देखते हुए आर्य समाज कदम दर कदम आगे बढ़ रहा है। इस कड़ी एक कदम और आगे बढ़ते हुए विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की, रोहतक में महाशय धर्मपाल जी के आशीर्वाद से प्रथम तल के छात्रावास का निर्माण करवाया गया। दिनांक 24 जुलाई, 2020 को दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, एम.डी.एच. परिवार के श्री प्रेम अरोरा जी एवं श्री अनिल अरोरा जी द्वारा आचार्य सुकामा जी के साथ निरीक्षण किया गया। इस श्रंखला में आगे बढ़ते हुए महाशय धर्मपाल जी ने आचार्य सुकामा जी को 1 करोड़ 15 लाख का चेक अपने आशीर्वाद स्वरूप भेंट किया। इस अवसर पर महाशय जी ने अपने सन्देश में कहा कि गुरुकुल वैदिक संस्कृति के प्राण हैं और हम आगे भी गुरुकुलों की सेवा सहायता करते रहेंगे। अपनी विरासत को संजोने तथा उनके उद्धार की अति आवश्यकता को देखते हुए आर्य समाज कदम दर कदम आगे बढ़ रहा है।

विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की, रोहतक के छात्रावास का निरीक्षण करते श्री विनय आर्य, एम.डी.एच. परिवार के श्री प्रेम अरोरा जी एवं श्री अनिल अरोरा जी एवं महाशय धर्मपाल जी से 1 करोड़ 15 लाख का चेक प्राप्त करती डॉ. सुकामा जी साथ में हैं श्री विनय आर्य जी, गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां एवं अन्य महानुभाव

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्यरत महाशय धर्मपाल आर्य वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने युवा सम्वर्धकों को दिया आशीर्वाद

सच्चे मित्र के गुण

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

....एक व्यक्ति ने दूध में कुछ पानी मिला दिया। दूध में एक रूप हो जाने से पानी का भी मूल्य दूध के समान हो गया। इस दूध को एक हलवाई खरीद कर ले गया। उसे दूध में कुछ गड़बड़ दिखाई दी और दूध को कढ़ाई में डाल भट्ठी पर चढ़ा दिया। अब पानी भाप बन कर उड़ने लगा। अपने मित्र को जलता हुआ देख दूध भी उफान लेकर बहार निकलने को उतावला हो गया। हलवाई ने उसे शान्त करने के लिये पानी के छीटें दिये तब कहीं जाकर दूध का उफान शान्त हुआ। सच्ची मित्रता इसीको कहते हैं।.....

ददाति प्रतिगृहणाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।भुंक्ते भेजयतें चैव शड् विधं प्रीति लक्षणम्।।

सच्चा मित्र अपनी वस्तुएं दूसरे मित्र को देता है और उस द्वारा दी गई को स्वीकार करता है। वह अपनी गोपनीय बात मित्र के सामने खुलकर बतलाता है और उसकी गुप्त बातों को पूछता है। वह दूसरे मित्रों से दिये खाद्य पदार्थो को खाता है और उन्हें खिलाता भी है। परस्पर स्नेह के से छः लक्षण है।

अप्रियाणि पथ्यानि मे वदन्ति नृणामिह। त एव सुहृदः प्रक्ता अन्ये स्युर्नामधाथः।।

जो हितकर बात चाहे वह सुनने में अप्रिय हो तब भी जो भले की कामना से सबके सामने प्रकट कर देता है वहीं हमारा मित्र होने के योग्य है। दूसरे लोग केवल नाम के मित्र होते हैं। A friend in need is a friend indeed.

विपति के साथी जो कसे सोई साचो मीत।

इस विषय में एक कथा आती है। दो मित्र किस जंगल के मार्ग से चले जा रहे थे कि उन्हें अचानक सामने से भालू आता दिखाई दिया। उनमें से एक तो झट समीप स्थित वृक्ष पर चढ़ गया। दूसरा बेचारा वृक्ष पर चढ़ना नहीं जानता था। उसे एक उपाय सूझा। वह वहीं पर श्वास रोक कर मृतक के समान लेट गया। भालू ने उसे सूंघा और उसको मरा हुआ समझ कर चलता बना। जब भालू दूर निकल गया तो वृक्ष पर चढ़ा हुआ मित्र हँसता हुआ नीचे उतरा और भूमि पर लेटे हुये मित्र से पूछने लगा कि भालू ने तुम्हारे कान में क्या कहा है? उसने उत्तर दिया कि भालू ने कहा है- A friend in need is a friend indeed - जो विपत्ति में साथ दे वही सच्चा मित्र होता है।

मित्रता दूध और पानी के समान हो

एक व्यक्ति ने दूध में कुछ पानी मिला दिया। दूध में एक रूप हो जाने से पानी का भी मूल्य दूध के समान हो गया। इस दूध को एक हलवाई खरीद कर ले गया। उसे दूध में कुछ गड़बड़ दिखाई दी और दूध को कढ़ाई में डाल भट्ठी पर चढ़ा दिया। अब पानी भाप बन कर उड़ने लगा। अपने मित्र को जलता हुआ देख दूध भी उफान लेकर बहार निकलने को उतावला हो गया। हलवाई ने उसे शान्त करने के लिये पानी के छीटें दिये तब कहीं जाकर दूध का उफान शान्त हुआ। सच्ची मित्रता इसी को कहते हैं।

निन्दा न करने वाला

सच्चे मित्र की यही पहचान है कि वह जो बात कहनी है उसे सामने ही स्पष्ट रूप से कह देता है। जो आपके सामने तो चिकनी, चुपड़ी बातें बढ़ा-चढ़ा कर करता है और पीछे से दूसरों के सामने निन्दा या उपहास करता है अर्थात् जिसकी दो जिह्वा सर्प के समान होती हैं वह सच्चा मित्र नहीं हो सकता।

जो आपको अपमानित या नीचा दिखाने का प्रयत्न न करे।

कुछ व्यक्तियों का यह स्वभाव होता है कि सबके सामने अपने मित्र की कोई कमी निकाल कर उसका उपहास करते हैं। अथवा किसी बात में मतभेद हो जाने पर अपनी बात को ही ऊपर रखने का प्रयत्न करते हैं। वे इस बात को भूल जाते हैं कि दूसेर व्यक्ति की भी समाज में प्रतिष्ठा होती है किसी को सम्मान देने पर ही दूसरा आपका सम्मान करेगा। जो किसी के मर्म स्थल को आहत कर दे ऐसा उपहास सर्वथा त्याज्य है। ऐसा करने से सम्बन्धों में खटास आ जाती है।

धैर्य बन्धाने वाला

मित्र व्यक्ति के पंख होते हैं। जिसके जितने मित्र हैं वह उतनी ही ऊँची उड़ान भर सकता है। आपका मित्र किसी कार्य को प्रारम्भ करता है तो आपको उसे प्रोत्साहित करना चाहिये। हतोत्साहित नहीं। यदि आप उससे सहमत नहीं हैं तब भी आपको कहना चाहिये कि मेरी इस विषय में पूरी सहमति नहीं है। आप अपने विवेक और आत्म विश्वास से ही इस कार्य को प्रारम्भ करें तो अच्छा रहेगा।

- शेष पृष्ठ 7 पर

Makers of the Arya Samaj : Swami Shraddhanand Ji

Continue From Last issue

After coming out of the jail Swami Shraddhanand went back to Delhi. Soon afterwards he received an invitation from Agra. Some Rajputs there, who were Hindus in everything but in name, were to be converted to Hinduism. This work appealed to him, and he toured the United Provinces for this purpose. He was successful in his mission and won over the Rajputs. The Rajputs were welcomed back to the fold. In the meantime the Mohammadans took offence at this and tried to undo the Swami's work. But they failed. Then the Swami established the All-India Shuddhi Sabha. The object of this was to bring non-Hindus into the fold of Hinduism.

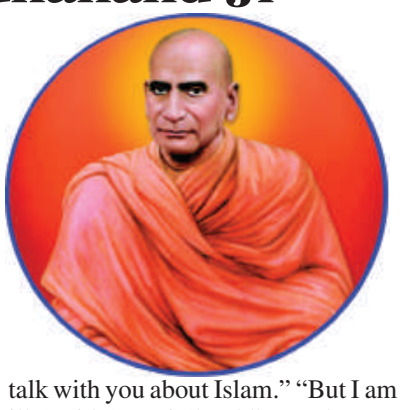

Unfortunately some riots took place between the Hindus and the Mohammadans at Saharanpur, Multan and other places. Delhi was also the scene of a terrible riot. All this upset the Indian leaders very much. Mahatma Gandhi fasted for twenty-one days in order to do penance for the excesses of the Hindus and the Mohammadans. But some of his friends made use of this opportunity in other ways. They called a conference which was attended by the representatives of all the communities. At this conference the problem of Hindu-Muslim Unity was discussed and many valuable decisions were reached. Swami Shraddhanand here played a leading part. He even promised to give up the Shuddhi work if the Mohammadans gave up their tabligh. 'Needless to say he fulfilled his promise to the letter, but the Mohammadans did not. So in the end he took to Shuddhi again. To further his mission Swarniji founded an Urdu daily. It was named the *Tej.* After sometime Swamiji went to South India. There he did much for the uplift of the non-Brahmins. He helped them when some of them started Satyagraha, at Waikom, in the Cochin State. The object of this was to give the non-Brahmins the right to use the thor-oughfare leading to the temple.

Then Swamiji felt the need for an English weekly. So he started the *Liberator.* It is a pity that it did not have a long life. Swamiji was a man of varied activities. On his retum from South India he founded the Kanya Gurukula, near Delhi, for the education of girls. The money for this was given by Seth Ragho Mal of Calcutta. He was a great admirer ofSwamiji. On his deathbed his last wish was to see the Swami, but he died before the Swami arrived.

One day when Swamiji was at Delhi a Muslim woman came to him and said, "I want to be converted to Hinduism. I have always loved this religion and have read much about it. I have often thought of becoming a Hindu, but I have not had the courage to do so before. Please make a Hindu of me and adopt me as your daughter." The Swami listened to her and felt happy. After sometime her father and husband arrived there. They tried to dissuade her, but she did not listen to them. Swamiji admired her courage and converted her to Hinduism. '

But this brought a great deal of trouble on the head of the Swami. The husband filed a case against him and some others. It is interesting to relate, however, that the Magistrate acquitted them all. On account of this the Mohammadans felt some resentment against Swami Shraddh-anand.

Just then Swami Shraddhanand's health was not good. He became worse on account of his unceasing activities, and fell a prey to pneumonia. During his illness he was treated by Dr. Ansari, the famous physician of Delhi. After a few days he recovered.

But Swamiji felt that his end was drawing near. He sent for his son, Mahashe Indra, and other fellow-workers. He told them that they should take down his will. But they would not, for they said, "You are all right now. The doctor says you will be able to move about in a few days." But the Swami thought otherwise.

During his illness one of his friends sent a wire asking about his health. He replied that his end was near. He said that he would be born again for the service of his country. Then he would have a stronger body. He said the same thing to Pt. Din Dyalu Sharma when he came to enquire about his health. Everybody was surprised at this. But Swamij i felt he was right.

One afternoon Swamiji was reclining in his bed when he heard a noise outside. He asked his servant what it meant. He replied that a Mohammadanwanted to see him and that he had asked him to come another day. At this the Swami asked the servant to bring the man in. When he came in he said, " I want to have a talk with you about Islam." "But I am ill," said Swami Shraddhanand. "You can talk to me about it some other day." After this the man asked for water Swamiji asked his servant to give it to him. He took the stranger outside and gave him water to drink. After drinking it the man came back again.

Then suddenly he drew a pistol from his pocket. He fired a shot at Swamiji which pierced his lungs. He fired another shot, but the servant rushed in and caught hold of him. He fired a third shot. The servant tried to snatch the pistol away from him. Then he fired at the servant. Just then the private secretary of Swami Shraddhanand arrived on the spot. He took the pistol away from the assassin and prevented him from running away. After this the police arrived and arrested the man.

Thus ended the life of a great Indian. Somebody has said of his end, "Strange are the ways of God. It was a Mohammadan doctor who saved the Swami's life. But it was another Mohammadan who took it."

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

पृष्ठ 4 का शेष

प्रकाश दिया और कहा कि इसको पढ़के आप समझ जाएंगे कि वह कैसे नास्तिक थे और कैसे हिंदू धर्म के विरोधी थे। महर्षि की सोच तो देश, धर्म, जाति से ऊपर सारे विश्व कल्याण की थी, हर मानव के कल्याण की थी। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में डॉ. वेद पाल जी ने कहा कि आज हर्षोल्लास का दिन है कि आज के दिन हम स्वतंत्र हुए थे। हजारों बलिदानियों की पुण्य आत्मा को वंदन करते हैं। स्वतंत्रता का अर्थ होता है अपने द्वारा शासन प्रणाली को लागू करना।

1857 की क्रांति के विफल होने के पश्चात देश की रियासतों, जातिवाद, भाई-भतीजावाद, भाषावाद और छोटे-छोटे राज्यों के कारण स्वतंत्रता दूर होती चली गई और विदेशी आक्रांताओं ने बहुत समय तक हम पर राज किया, लूटा और गुलाम बना के रखा। वरना कालिदास ने रघुवंश में कहा है कि आर्यवर्त का रथ आकाश से लेकर पाताल तक चला करता था, एक छत्र रघुवंशियों का राज्य था।

महाभारत युद्ध के पश्चात उच्च वर्गीय ब्राह्मण विद्या वृन्द, वैदिक विद्वानों का अभाव हो गया था। अनपढ़ व्यक्तियों ने जैसा समझा वैसा ही उपदेश, अर्थ का अनर्थ करते हुए क्रियाएं करवानी आरंभ कर दी। पाषाण तथा मूर्ति पूजा होने लग गई और विदेशी लोगों ने हमले करके शासन कर लिया।

महाराज मनु ने भी पराधीनता से दु:ख मिलता है और जो असीम सुख मिलता है वह अपनी सत्ता तथा अपने राज्य में ही मिलता है। स्वदेशी राज्य में सत्य, न्याय व धर्म की प्रतिष्ठा होती है। इस पीड़ा को महर्षि देव दयानंद ने समझा महसूस किया और इसका उल्लेख उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में बड़े सुंदर तरीके से किया है।

डॉ. वेदपाल जी ने बड़े ही सहज भाव से वर्तमान की परिस्थितियों का उल्लेख किया और आर्यवर्त की पुन: स्थापना के लिए प्रेरित किया। राजा व राज्य अध्यक्ष के गुणों की चर्चा करते हुए कहा कि वही प्रजा को सुख दे सकता है, जिसकी करनी और कथनी में अंतर न हो और जैसा वह चाहता है वैसा काम करवा सकता है, लेकिन स्वयं उसका आचरण भी वैसा ही होना चाहिए। नागरिकों का मनोबल ऊंचा होना चाहिए और वह धर्म के मार्ग पर चलते हुए राष्ट्र को समद्ध बनाएं, अपने कर्तव्य को समझते हुए कार्य करें, तभी राष्ट्र उन्नत होगा समृद्ध होगा और विश्व में सम्मानजनक होगा। आदरणीय श्री धर्मपाल आर्य जी, यशस्वी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से डॉ. वेद पाल जी का धन्यवाद किया और श्रोताजनों को आशीर्वाद देकर प्रेरित किया कि आप इसी तरह स्वाध्याय और व्याख्यानमाला द्वारा ज्ञान अर्जित करते हुए और अपने जीवन को सार्थक करें, धन्यवाद!

डॉ. वेदपाल जी बड़े ही सुंदरता, सरलता से बहुत सारी व्याख्याओं को समझाने का प्रयास किया। उन्होंने वेद, गीता, ब्राह्मण, उपनिषद, व अन्य बहुत सारे ग्रंथों के माध्यम से अपनी बात प्रस्तुत की ताकि श्रोता उनकी बात के भाव को समझ सकें। सभी सुधी श्रोताओं की ओर से हम उनका हृदय की गहराइयों से नमन करते हैं और धन्यवाद करते हैं उन्होंने अपनी ज्ञान गंगा से हमें लाभाविन्त किया।

इस प्रवचन माला का श्रीमती विनीता खन्ना, श्रीमती सविता खुराना, श्रीमती साधना खन्ना, डॉ. मुकेश आर्य, श्री वेद प्रकाश, श्री किशोर आर्य, श्री विकास कुमार शर्मा, श्री विवेक अग्रवाल तथा श्री विश्वास आर्य ने संयोजन किया तथा तकनीकी रूप से श्री विपिन भल्ला व श्रीमती अनु वासुदेवा ने सहयोग किया, सभी का हार्दिक धन्यवाद।

– ***सतीश आर्य, महामन्त्री, आ.के.सभा***

पृष्ठ 6 का शेष

आपकी सफलता से प्रसन्न होने वाला

सच्चे मित्र की यही पहचान है कि वह आपकी उन्नति को देख प्रसन्न होता है। व्यक्तियों का यह स्वभाव है कि वे किसी की उन्नति, प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा को देख जलते हैं। योग दर्शन में कहा है कि पुण्यात्माओं को देख मन में प्रसन्नता के भाव आने चाहियें। ऐसा विचार करना चाहिये कि धन्य हैं इसके माता-पिता, धन्य है यह व्यक्ति जो पूर्व जन्म के पुण्य और पुरुषार्थ से आज इतने बड़े पद पर आखढ़ है। इससे अमर्ष अर्थात् असहनशीलता का भाव दूर होता है। सच्चा मित्र अपने मित्र की सफलता को अपनी मानकर उतना ही प्रसन्न होता है जितना उसका मित्र।

आपको हृदय से चाहने वाला

सच्चे मित्र दो शरीर और एक हृदय वाले होते हैं। वे एक दूसरे के गुण दोषों को जानते हुये भी मित्रता को निभा लेते हैं। वे एक दूसरे को जैसे स्थिति है उसी में स्वीकार कर लेते हैं। वे उलाहना नहीं देते और न ही कमियां निकालते हैं तथा अलग होने की सोचते ही नहीं।

आपकी बातों में रूचि लेने वाला

कुछ लोगों का यह स्वभाव होता है कि वे अपने मित्रों से भी औपचारिकता ही निभाते हैं। ऐसी मित्रता बहुत दिनों तक टिक नहीं पाती। जो व्यक्ति आपकी बात ध्यान से नहीं सुन पाता वह आपत्काल में आपका सहयोग करेगा इसकी सम्भावना कम ही है।

उपसंहार– लोक में कहावत है– 'पानी पीए छानकर मित्रता कीजे जानकर' इसलिये आपको मित्र बनाने में बहुत ही सावधानी रखनी चाहिये। जो आवश्यकता से अधिक आपकी चापलूसी या बड़ाई करते हैं उनका कुछ स्वार्थ होता है और वह पूरा होते ही वे इधर झांकते भी नहीं। कभी मिल भी जायें तो केवल औपचारिता ही दिखाते हैं। ऐसे लोग सच्चे मित्र कभी नहीं हो सकते।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से नई आर्यसमाज की सम्बद्धता

आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-11 हेतु फ्लैट खरीदा : कागज सौंपे

उत्तर पश्चिम दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र में गत 7-8 वर्षों से चल रही आर्यसमाज - आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-11 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक 1 मार्च में पारित प्रस्ताव के अनुसार सम्बद्ध किया गया। इस आर्यसमाज के भवन के लिए सैक्टर-11 में एक फ्लैट खरीदा गया है, जिसकी रजिस्ट्री दिल्ली आर्य पतिनिधि सभा के नाम कराई गई है। गत दिनों सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं श्री प्रेम अरोड़ा जी की उपस्थिति में आर्यसमाज के अधिकारियों श्री सुरिन्द्र चौधरी जी, आचार्य शिवनारायण जी एवं श्री गिरीश आर्य जी ने रजिस्ट्री के कागजात महाशय धर्मपाल जी को सौंपकर आशीर्वाद प्राप्त किया। ज्ञातव्य है कि महाशय धर्मपाल जी ने इस भवन को खरीदने के लिए 10 लाख रुपये का सहयोग प्रदान किया था।

महाशय धर्मपाल जी ने दिया श्री रणजीत स्माकर शान्ति निकेतन कन्या गुरुकुल लोआकलां को 25 लाख का सहयोग

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल ने कन्या गुरुकुल सिद्दीपुर लोवा कलां की सहायता और सुचारु संचालन के लिए प्रधानाचार्या राजन मान को अपने कार्यालय में 25 लाख रूपये का चैक सौंपते हुए कन्या शिक्षा की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को जमकर सराहा। आर्य समाज के वरिष्ठ नेता आर्य हरिओम दलाल ने बताया कि गत एक मार्च को गुरुकुल के वार्षिक समारोह में महाशय धर्मपाल जी ने इस राशि की घोषणा की थी। परन्तु कोरोना के कारण गुरुकुल की समिति के लोग उनके पास नहीं पहुंच सके थे। अब महाशय जी ने स्वयं फोन कर समिति को बुलाया और 25 लाख रुपए की राशि का चैक सौंप दिया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, श्री करतार सिंह टीकरी कलां व आचार्या प्रीति मौजूद रहे।

शोक समाचार

श्री सुधीरचन्द्र घई जी को पत्नीशोक

आर्यसमाज बिडला लाइन्स, कमला नगर दिल्ली के पूर्व मन्त्री श्री सुधीर चन्द्र घई जी की धर्मपत्नी श्रीमती अंजू घई जी का दिनांक 25 अगस्त, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 24 अगस्त, 2020 से रविवार 30 अगस्त, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 27-28 अगस्त, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 26 अगस्त, 2020

प्रतिष्ठा में,

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट/टेलिग्राम द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह